कृति : **समर्पण**

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन, अहमदाबाद गुज.

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा

प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए.

'शाह १/१, गोकुल अपार्टमेन्ट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद - ३८००६३ फोन : ०७६-२७४३८२०७

मूल्य : समर्पण

समर्पण बनने का सूत्र है

समर्पण!

समर्पण करने का सूत्र है।
बीज समर्पित होता है, वृक्ष बन जाता है
माटी समर्पित होती है, गागर बन जाती है
बूंद समर्पित होती है, सागर बन जाती है,
पत्ता समर्पित होता है सावन बन जाता है,
पतित समर्पित होता है, पावन बन जाता है।
बनने के लिए समर्पण जरूरी है।
मैं जिस समर्पण की बात कर रहा हूँ
वह आत्म समर्पण नहीं, आत्मीय समर्पण है।
आत्म समर्पण चोर और डाकू करते हैं
मृत्यु से बचने और बचे हुए जीवन में कुछ करने के लिए।
आत्मीय समर्पण मोक्ष के इच्छुक मुमुक्षु श्रावक और साधु करते हैं।
मृत्युंजय बनने और इस जीवन द्वारा संसार सागर तरने के लिए।
आत्म समर्पण मजबूरी है,
तो आत्मीय समर्पण जरूरी है।
एक बार जो आत्मीय समर्पण कर देता है, वह तत्क्षण उसका फल पाता है।
गुरूवर के जीवन का प्रसंग है, वे कहते हैं-

जब मैं पहली बार आत्म कल्याणार्थ परम पूज्य गुरूवर १०८ श्री विद्यासागर जी के श्री चरणों में पहुंचा और उनसे सविनय निवेदन किया कि मुझे अपने जैसा बना लें।-गुरूदेव !

तब गुरूदेव बोले-पात्र हो ?

मैं इस सांकेतिक प्रश्न को समझ, अविलम्ब गुरू चरणों में सांष्टांग समर्पित हो गया।

मुझसे समीचीन समाधान पाक, गुरूदेव ने कहा-

चरणों से उठो और ....

गुरूदेव आगे कुछ बोलते उससे पहले मैं बोल पड़ा—चरणों से उठना ही होता तो
समर्पित क्यों होता? अब समर्पित हो गया हूँ तो समर्पित ही रहूँगा।
गुरूदेव बोले—वही तो मैं कह रहा हूँ कि चरणों से उठो और यह आचरण उठाओ।
क्योंकि तुम्हारा समर्पण तुम्हारे पात्र होने का परिचय है।
इसीलिए मेरे गुरूदेव कहते हैं—मेरे बनने की कहानी, मेरे समर्पण की कहानी है।
चाहे गुरू गौतम स्वामी से पूछो या आचार्य कुन्दकुन्द से,
श्री धरसेनाचार्य से पूछो या, आचार्य पुष्पदंत—भूतबली से,
आचार्य शांतिसागर से पूछो या श्री विद्यासागर से,
गुरूदेव पुष्पदंत सागर से पूछो या मुझ प्रज्ञासागर से,..